एथलीट्स का रक्त-पासपोर्ट बनाने की कोशिश

खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं में खिलाड़ियों द्वारा अपने प्रदर्शन में सुधार के लिए नाना प्रकार के रसायनों व अन्य नाजायज़ तरीकों का उपयोग करना आयोजकों के लिए सिरदर्द है। खिलाड़ी व उनके मददगार लगातार नए-नए तरीके इजाद करते रहते हैं और आयोजक उन्हें पकड़ने के लिए नए-नए परीक्षण विकसित करते रहते हैं। शायद अब आयोजकों ने एक अनोखा तरीका खोज निकाला है।

इसे 'एथलीट पासपोर्ट' योजना का नाम दिया गया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक एथलीट को अपने खून का एक शुरुआती नमूना जमा करना होगा। बाद में लिए जाने वाले रक्त के नमूनों की तुलना उसी शुरुआती नमूने से की जाएगी। उम्मीद यह है कि इससे कुछ पदार्थों की मात्रा में अंतरों को पकड़ा जा सकेगा। जैसे, लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में नाटकीय वृद्धि पर नज़र रखना संभव होगा। लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में अचानक वृद्धि कतिपय रसायनों के सेवन या स्वयं अपना खून चढ़वाने के परिणामस्वरूप होती है। अर्थात योजना यह है कि उन पदार्थों की बजाय उनके प्रभावों पर निगाह रखी जाए।

इस योजना की प्रायोगिक जांच अंतर्राष्ट्रीय सायक्लिंग संघ कर रहा है। संघ ने 804 सायकिल चालकों के रक्त के 8300 नमूने प्राप्त किए हैं। इनमें से कुछ चालकों के नमूनों की जांच से आगे और छानबीन की ज़रूरत सामने आई है।

यह भी उम्मीद है कि इस जांच के निष्कर्षों का उपयोग अदालती कार्रवाई में भी किया जा सकेगा। अलबत्ता अभी सायक्लिंग संघ इस बात का आकलन कर रहा है कि क्या इस तरह रक्त के नमूनों की जांच एक सशक्त प्रमाण हो सकता है। इस तरह के परीक्षण को खेलकूद स्पर्धाओं में लागू करने से पहले यह यकीन होना ज़रूरी है कि इससे निर्दोष खिलाड़ी परेशान नहीं होंगे। इस संदर्भ में वर्ल्ड एण्टी डोपिंग एजेंसी 'रक्त पासपोर्ट' हेतु खून लेने के तरीकों व की जाने वाली जांचों का एक मानक प्रोटोकॉल प्रकाशित करने जा रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***